सच्चिदानंद सिन्हा

लोकतंत्र की चुनौतियाँ

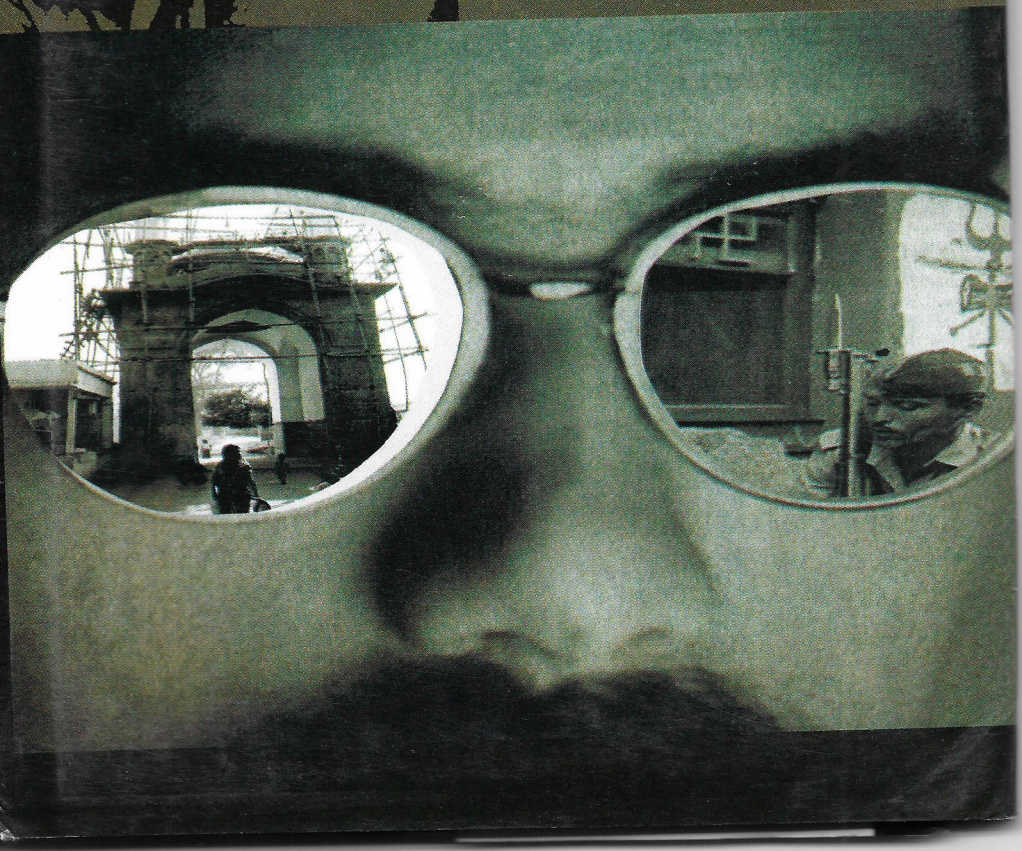

लोकतंत्र की चुनौतियाँ

लोकतंत्र की चुनौतियाँ

सच्चिदानंद सिन्हा

नवोदय सेल्स

ए-24, गली नं.-7, पश्चिमी विनोद नगर, दिल्ली-110092

ISBN : 81-88469-61-0

नवोदय सेल्स
ए-24, गली नं.-7, पश्चिमी विनोद नगर,
दिल्ली-110092 द्वारा प्रकाशित
संस्करण : 2012
© लेखकाधीन
मूल्य : 250.00
शुभम ऑफ्सेट, शाहदरा, दिल्ली-110032
द्वारा मुद्रित

नवोदय सेल्स, वाणी प्रकाशन की सहयोगी संस्था

विषय-सूची

भूमिका 7

(क) सांप्रदायिकता की चुनौती

1. भारत विरोधियों का पाँचवाँ दस्ता 15
2. भारतीय गणतंत्र का भीतरी संकट 20
3. एक वक्तव्य के मंतव्य 24
4. यह हिटलर का रास्ता है 29

(ख) आदमी विज्ञान के आईने में

5. नस्लवादी मान्यताएँ और जीन विज्ञान 37
6. प्रतिस्पर्धा या परस्पर सहयोग 46

(ग) अलगाववाद की समस्या

7. लोकतंत्र का सिकुड़न और अलगाववाद 59
8. कश्मीर : एक नया अध्याय 64
9. कश्मीरियत, भारतीयता और बदले संदर्भ 69
10. हत्या, दंड और प्रतिहिंसा 73

(घ) अर्थनीति और विकासनीति

11. कानकुन की बेगानी महफिल 81
12. छँटनी की होड़ 86
13. दूसरी दुनिया का नक्शा कहाँ है 91
14. विकास नीति और पर्यावरण 96
15. राजनीतिक गतिरोध कैसे टूटे 101
16. कैसा होगा आर्थिक नीतियों का चेहरा 106

(ङ) **नीतिहीनता और अनैतिकता**

17. भ्रष्टाचार की जड़ें 113
18. नीतिहीनता अनैतिकता की जड़ है 119

(च) **पिछड़ी एवं दलित राजनीति की भूमिका**

19. बदहाली के बीच सत्ता का खेल 127
20. जातीय गठजोड़ की रणनीति 131
21. राजनीति में आरक्षण का पासा 136
22. गाँठों में उलझा लोकतंत्र 140
23. नये संयुक्त मोर्चे की आवश्यकता 145
24. सामाजिक बदलाव में दलितों की भूमिका 153

भूमिका

जे. पी. ने कभी कहा था कि "क्रांतियाँ अपना किताब खुद लिखती हैं" वे यह बतलाना चाहते थे कि किसी महा-आख्यान द्वारा पूर्व निर्धारित लकीर पर चलने की बजाय क्रांतियों को अप्रत्याशित अवरोधों के बीच हर मुकाम पर नये सिरे से अपना मार्ग बनाना पड़ता है। विख्यात लेखक आर्थर कोएस्टलर ने स्पार्टकस के नेतृत्व में हुए गुलामों के विद्रोह पर लिखे अपने उपन्यास 'ग्लैडिएटर्स' में लॉ ऑफ डीटूर्स (टेढ़े मेढ़े रास्ते का नियम) का इसी अर्थ में वर्णन किया है। उसने यह बतलाने की कोशिश की है कि क्रांतियों को प्रायः अपनी सरल मान्यताओं से हटकर घुमावदार पथ अपनाना पड़ता है। निस्संदेह, इसमें आदर्शों से भटकाव का जोखिम रहता है। कोएस्टलर ने इस उपन्यास में एक ऐतिहासिक घटना के बहाने हमारे अपने समय की क्रांतियों के भटकाव का ही चित्रण किया है। जे. पी. ने ऊपर वाली बात तब कही थी जब वे छात्र आंदोलन के माध्यम से भारतीय लोकतंत्र के एक खास तरह के गतिरोध को तोड़ने की कोशिश कर रहे थे जिसे उन्होंने 'लोक' और 'तंत्र' के बीच बढ़ते फांक के रूप में देखा था यानी वह स्थिति जहाँ जन प्रतिनिधि और उनके द्वारा चलाई जा रही व्यवस्था जन भावनाओं से कट जाए। लेकिन मर्ज तात्कालिक नहीं था जिससे एक झटके में निजात पाई जा सके। इस छात्र आंदोलन से निकले नेताओं के स्खलन से भी यही निष्कर्ष निकलता है कि समाज में ऐसे अप्रत्याशित दबाव बनते रहते हैं जिससे निकलने के लिए साफ दृष्टि, लक्ष्य के प्रति आस्था और दृढ़ संकल्प की जरूरत होती है।

किसी भी क्रांति या लोकतांत्रिक परिवर्तन के रास्ते में बाधाएँ दो कारण से उपस्थित होती हैं। पहली तो आदर्श की अवधारणा के संबंध में वैचारिक धुंध से जो प्रायः संबद्ध समूह की विशेष स्थिति की उपज होती है, और दूसरा बिल्कुल अलग परिवेश के कारण—जिसमें संबद्ध मानव समूहों का सामाजिक ढाँचा बिल्कुल अलग तरह का होता है जिसमें पहले तरह के आदर्शों को अमली रूप बिल्कुल अलग तरह से दिया जा सकता है।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी की

सभी क्रांतियों और जन-आंदोलनों की ऊर्जा का स्रोत फ्रांस की 1789 की क्रांति में उद्घोषित 'स्वतंत्रता, समता और भाईचारे' का आदर्श था। इस आदर्श का जनक उस समय वहाँ का नवोदित मध्यम वर्ग (बुर्जुआ) था जो राजा के स्वेच्छाचारी शासन और सामंती व्यवस्था की बंदिशों का अंत करना चाहता था। लेकिन इसमें हर तरह की गुलामी से मुक्ति का स्वर प्रतिध्वनित होता था चाहे वह अफ्रिकी मूल के लोगों की गुलामी हो, राष्ट्रों की गुलामी हो या जाति व्यवस्था, नस्ल और लिंग पर आधारित बंदिशों की जिंदगी हो। समता का अर्थ भी अत्यंत ही व्यापक था और यह संपत्ति मूल, नस्ल, जातपाँत, धर्म आदि के भेद से परे जा सभी मनुष्यों की समानता का आह्वान था। भाईचारे का नारा स्वतंत्रता और समता दोनों ही नारों के संयोजन से सभी मनुष्यों के बीच बंधुत्व स्थापित करने का आह्वान था क्योंकि भाईचारा तो समान और स्वाधीन लोगों के बीच ही संभव है। अंततोगत्वा यह उस सत्य की याद दिलाता था कि सभी मनुष्य एक ही मानववंश के हैं, बाकी भेदभाव झूठे आवरण और पाखंड हैं।

परिस्थितिजन्य आवरणों और इससे जुड़े विशेषाधिकारों का असर आदमी की सोच पर इतना गहरा होता है कि वह अपने संकुचित दायरे के बाहर निकल इसको तब तक छोड़ नहीं पाता जब तक नयी परिस्थितियों से साक्षात्कार, या बहिष्कृत समूहों के प्रतिकार उसके पूर्वग्रहों पर आघात नहीं करते। स्वयं फ्रांस की क्रांति के समय एक निर्मम संघर्ष का जन्म हुआ जब बुर्जुआ वर्ग की राजनीतिक स्वतंत्रता और समता के बरक्स फ्रांस के निर्धन वर्गों ने आर्थिक समता की माँग रखने की कोशिश की। इसी काल में बाबफ ने 'समान लोगों के घोषणा पत्र' नाम से सबसे गरीब तबकों के आर्थिक बराबरी के नारे को आगे बढ़ाया। एक तरह से क्रांतिकारी समाजवाद का यह पहला उद्घोष था। उस समय के स्थापित स्वार्थों के लिए यह इतना डरावना नारा था कि इसे दबाने की भरपूर कोशिश हुई और बाबफ को अंततः एक असफल विद्रोह के बाद मौत की सजा दी गई। यह पहला प्रयास था लोकतंत्र के अर्थ को फैलाने का। लेकिन इसके बाद से लगातार लोकतंत्र के अर्थ को नये परिवेशों के अनुसार अर्थ देने के प्रयास होते रहे हैं और इस तरह समता और स्वतंत्रता के विचार, जो बिल्कुल स्वाभाविक दिखाई देते हैं, विभिन्न समूहों के बीच टकराहट का कारण बनते रहे हैं। इस तरह लोकतंत्र का संघर्ष सीधी लकीर की बजाय टेढ़े-मेढ़े रास्ते से गुजरता दिखाई देता है। इसमें पूर्वग्रह और विविध हितों के इर्द-गिर्द उभरते उन्माद से आदर्श बार-बार धुँधले होते रहे है। समय की राख के भीतर से आदर्शों की चिनगारी के बार-बार प्रज्वलित होने से ही आजादी का दायरा फैलता रहा है। लेकिन यह संघर्ष आज भी नये रूपों में जारी है। जे. पी. क्रांति को कुछ ऐसा ही नया अर्थ देने का आह्वान कर रहे थे।

हमारा राष्ट्रीय आंदोलन भी कहीं न कहीं लोकतांत्रिक क्रांति के उन्हीं आदर्शों

से प्रेरित था जिसकी चर्चा ऊपर की गई है। यह कहना गैरजरूरी है कि जब आजाद भारत का संविधान बनाने का उद्यम हो रहा था तो यह साफ स्लेट पर तस्वीर बनाने का उद्यम नहीं था। सतह के नीचे से आजादी के पहले के संघर्ष और विवाद, विभाजन की त्रासदी और इसके पीछे से इस प्राचीन देश की विविध परंपराएँ भी तस्वीर पर अपनी छाया डाल रही थीं। इसलिए यह पूरी तरह पूर्वग्रह मुक्त ढाँचा नहीं बन सकता था। स्वाभाविक था कि उस समय तक प्रभावी रहे समूहों के विचारों की गहरी छाप इस संविधान पर हो। डॉ. भीमराव अंबेडकर की संविधान निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका से यह जरूर हुआ कि देश के दलित समूहों और उनके साथ-साथ सामाजिक रूप से दूसरे पिछड़े समूहों के लिए भी यथेष्ट 'स्पेस' इस संविधान में बना रहा। समय के साथ ही परिस्थितियों के संघात से संविधान के हितकारी और अहितकारी अर्थ खुलते रहे हैं। इसका एक फायदा यह है कि हमारा संविधान एक जड़ दस्तावेज नहीं है बल्कि इसमें इसकी मूल मान्यताओं और घोषित उद्देश्यों के आलोक में अधिक से अधिक लोकहितकारी रूप देते रहने की गुंजाइश है। पश्चिमी देशों के लोकतांत्रिक संविधानों से, एक अर्थ में, हमारे संविधान में मूलभूत फर्क है। जहाँ पश्चिम के लोकतंत्र पर वहाँ के आर्थिक मुद्दों की प्राथमिकता की छाप है हमारे यहाँ आर्थिक मुद्दों के अलावा जाति व्यवस्था, जनजातीय समूहों की विशेष स्थिति और देश के सांप्रदायिक बँटवारे की गहरी छाप भी लोकतंत्र के विकास पर रही है।

बीसवीं शताब्दी के तीस के दशक में यूरोप में नस्लवाद के आधार पर लोकतंत्र पर एक बड़ा संकट आ गया था जिसमें फासीवाद का उदय हुआ। लेकिन एक प्रलयंकारी विश्वयुद्ध के बाद कम से कम व्यवस्था पर उसका एकाधिकार खत्म हो चुका है—हालाँकि व्यवहार में जब तब उसकी झलक अब भी दिखाई देती है। हमारे यहाँ भी फासीवाद की तर्ज पर ही सांप्रदायिकता के आधार पर राजनीति को एक संकीर्ण और अधिनायकवादी स्वरूप देने के प्रयास होते रहे हैं। हमारे लोकतंत्र के विकास पर इसकी खतरनाक छाया लगातार बनी रही है। राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में कुछ सशक्त समूहों के हाथ सभी अधिकार केंद्रित करने के अलावा फासीवाद ने नस्ल एवं मूलों की श्रेष्ठता की, और इस आधार पर उनकी निगाह में 'हीन मानवों' के अस्तित्व को मिटाने या उन्हें प्रताड़ित करने की नीति भी अपनाई थी। इसके लिए उन्होंने इतिहास और जीव विज्ञान के सिद्धांतों को भी तोड़ने-मरोड़ने की कोशिश की थी जिससे मनुष्यों के आपसी संघर्ष और एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य के शोषण का औचित्य साबित किया जा सके और यह बतलाया जा सके कि जो सक्षम मनुष्य हैं अस्तित्व में उन्हीं के बने रहने की जरूरत है। पुस्तक के दो लेख इस विचार का खंडन करते हैं। इसमें एक लेख अराजकवादी नेता प्रिंस क्रोपोटकिन की सुप्रसिद्ध पुस्तक 'म्युचुअल एड' की समीक्षा के रूप में और दूसरा जीव विज्ञान के आलोक में वैज्ञानिकों द्वारा मानव वंशवृक्ष की पड़ताल पर आधारित है। चूंकि मूल और मजहब

Loktantra Ki Chunautiyan

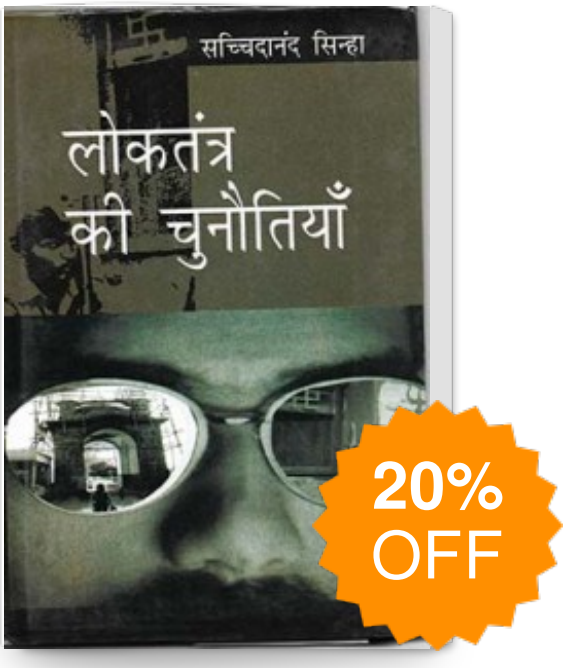

Publisher : Vani Prakashan ISBN : 9788181433282 Author : S Sinha

Type the URL : http://www.kopykitab.com/product/9306

Get this eBook